III

Date: 3/2/22

गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा में शिक्षण विधियाँ :-

गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा की शिक्षण विधि कक्षा के भीतर की से सर्वथा भिन्न होती है। गृहविज्ञान प्रसार कार्यकर्ता का मुख्य उद्देश्य जन-समुदाय की शिक्षण विधि से सर्वथा भिन्न होती है। गृहविज्ञान प्रसार कार्यकर्ता का मुख्य उद्देश्य जन-समुदाय की अभिवृत्तियों एवं व्यवहार में परिवर्तन लाने का होता है। इसके लिए उत्कृत विधि से संचार स्थापित करना होता है।

उपयुक्त संचार स्थापित करना होता है।

उपयुक्त संचार द्वारा ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करनी पड़ती है। कि लक्ष्य समूह स्वेच्छा से परिवर्तन स्वीकार करने के लिए तत्पर हो जाए गृहविज्ञान प्रसार की शिक्षण विधि इतनी प्रभावशाली होनी चाहिए, जो लोगो की योग्यताओं को विकसित करके उन्हें बेहतर स्थितियों।

गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा मे शिक्षण की ये ही विधियाँ प्रयुक्त की जाती है जिन्हे 'अनुभाग - प्रसार शिक्षा अध्याय 7 में लिखा जा चुका है। जिसके विभिन्न चरण है। 1- ध्यानाकर्षण 2- अभिरुचि 3- शिक्षण अध्याय 4- आकांक्षा 5- विश्वास 6- क्रिया 7- संतुष्टि 8- मूल्यांकन (देखे अध्याय 7)

Date: / /

गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा में सम्पर्क विधियां →

गृहविज्ञान प्रसार कार्य विभिन्न सम्पर्क विधियों द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। गृहविज्ञान प्रसार कार्यकर्ता को ग्रामीण महिलाओं से सम्पर्क करने उनका शैक्षणिक स्तर सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोण पसन्द, नापसन्द उनकी अभिरुचियों मूल्यों धार्मिक पारम्परिक, परम्पराओं तात्कालिक आवश्यकता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करनी होती है

1- व्यक्तिगत सम्पर्क →

किसी भी क्षेत्र में गृहविज्ञान प्रसार कार्य आरम्भ करने से पहले, उस स्थान के नेता सरपंच या मुखिया तथा प्रभुत्व महिलाओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके अपने कार्यक्रमों के विषय में उन्हें जानकारी देना आवश्यक है।

2- पारिवारिक सम्पर्क →

ग्रामीण महिलाओं की वास्तविक स्थिति, उनका रहन-सहन उसकी समस्याएँ जानने के लिए आवश्यक है कि पारिवारिक स्तर पर उनसे सम्पर्क किया जाए प्रसार कार्यकर्ता पारिवारिक सदस्यों से घुल-मिलकर बच्चों की देखभाल की जाति है।

आचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया